

ISSN 2321 - 5704

भाषा भारती

राजभाषा उन्नयन की वार्षिक पत्रिका

अंक 6, वर्ष 6, फरवरी 2019



राजभाषा प्रकोष्ठ
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
— सागर —

भाषा भारती

राजभाषा उन्नयन की वार्षिक पत्रिका

ISSN 2321-5704

(वर्ष-6, अंक-6, फरवरी, 2019)

संरक्षक
कुलपति, प्रो. आर.पी. तिवारी

परामर्शदाता
कुलसचिव, कर्नल राकेश मोहन जोशी

सम्पादक मण्डल
प्रो. ए.एन. शर्मा
डॉ. पंकज तिवारी
डॉ. ऋतु यादव
डॉ. अरविन्द कुमार
डॉ. अनुराग श्रीवास्तव
श्री आर.के. पाल

सम्पादक
डॉ. छबिल कुमार मेहेर

सहायक सम्पादक
अभिषेक सक्सेना



राजभाषा प्रकोष्ठ

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (मध्यप्रदेश)-470003

दूरभाष : (07582) 265828

ई-मेल : hindicell2015@gmail.com

आलेख

- समय की रेखा पर बदलती नारी 117
ऋतु यादव
- संविधान की उद्देशिका और कवि धूमिल 123
अफरोज बेगम
- समतामूलक समाज और आम्बेडकर के विचार 130
नंदी पटोदिया, दिवाकर शर्मा

समीक्षा

- ‘चीख’ : व्यापक जीवनानुभव की सृजनात्मक अभिव्यक्ति 137
अमरेन्द्र त्रिपाठी
- बुन्देले रणबाँकुरों के स्वातंत्र्य समर की गौरवशाली दास्तान 144
पंकज सिंह
- प्रकृति, मनुष्य और विज्ञान का औदात्य 151
हिमांशु कुमार

रिपोर्ट

- राजभाषा प्रकोष्ठ : कदम दर कदम 158
विनोद रजक



प्रकृति, मनुष्य और विज्ञान का औदात्य

—हिमांशु यादव

‘बादलों में उड़ती धूप’ नवीन कानगो का पहला काव्य-संग्रह है जो सतलुज प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा) से 2018 में प्रकाशित हुआ है। इसमें उनकी छोटी-बड़ी कुल 108 कविताएँ और 44 गजलें संगृहीत हैं। वैसे तो नवीन कानगो सूक्ष्मजीव विज्ञान के प्रोफेसर हैं पर हिन्दी कविता में हस्तक्षेप कर वे आश्चर्यचकित करते हैं। कविता और गज़ल की हिन्दी-उर्दू परम्परा से वे भलीभाँति परिचित जान पड़ते हैं। प्रकृति और विज्ञान का संतुलन ही मनुष्य को उदात्त भावभूमि पर प्रतिष्ठित करता है। कविता अन्ततः मनुष्यता की ही पक्षधर होती है। कविता के दरवाजे सबके लिए खुले हुए हैं। कविता के विस्तृत मनोलोक में कोई भी आवाजाही कर सकता है। एक सूक्ष्म जीव वैज्ञानिक होने के बावजूद नवीन कानगो अपनी संवेदनशीलता से उत्पन्न बेचैनी के कारण कवितायें रचते हैं। गज़ल भी लिखते हैं। वे सोशल मीडिया पर भी सक्रिय हैं और खूब सक्रिय हैं। इस संग्रह की बहुत सी कवितायें सोशल मीडिया पर भी हैं।

इस संग्रह में नवीन कानगो ने अपने अंदाज में कविता के ज़रिये कई विषयों और मुद्दों पर धीमी-सधी बातचीत की है। वस्तुतः नवीन कानगो छोटे में मोटी बात करने वाले कवि हैं इसलिए उनकी कविताओं में कुछ न कुछ ऐसा जरूर होता है, जो चौंकाता है, संजीदा बनाता है और नये तरीके से सोचने को मजबूर कर देता है। यह कुछ न कुछ जैसी बात उनकी रचनाओं की विषय-वस्तु, पुराने मुद्दे पर नया नजरिया या कविता में शब्दों का नज़ाकत भरा रिश्ता-में से कोई भी हो सकती है, जो उनकी कविताओं को ताकत देती है।

अपनी ‘कविता’ शीर्षक कविता में वे कविता के जन्म की कथा बड़े संवेदनशील ढंग से कहते हैं—

“शब्द छँटते हैं
विचार विन्यस्त होने लगते हैं
हृदय डूब कर उभरता है
मन शरीर के पास उतर जाता है
अश्रु आँखों की कोरों तक पहुँचते हैं
एक कविता जन्म लेती है।”